सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान की ओर

निमरत खण्डपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार, 'शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक प्राथमिक विद्यालयों में सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान प्राप्त करना होगा। सीखने की बुनियादी आवश्यकताओं (अर्थात बुनियादी स्तर पर पढ़ना, लिखना और अंकगणित) को हासिल करने पर ही हमारे विद्यार्थियों के लिए बाक़ी नीति प्रासंगिक होगी' (पैरा 2.2, एनईपी 2020)। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ़एलएन) के महत्त्व को सबसे सुदृढ़ रूप से स्थापित करने वाला यह कथन सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी उन्हें मिलने वाली शिक्षा से लाभान्वित हों। फलस्वरूप यह शिक्षा उन्हें वृहत्तर समाज के सहयोगी व उत्पादक सदस्य बनने में तैयार करती है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की महत्ता

विभिन्न मापदण्डों के लिहाज़ से एफ़एलएन महत्त्वपूर्ण है। ऐसा लगता है कि अपने बहुत छोटे विद्यार्थियों के लिए स्कूलों के सरोकार भविष्य में विद्यार्थियों की भलाई के साथ-साथ राष्ट्र के कल्याण को भी प्रभावित करते हैं।

चलिए, शुरुआती स्तर से आरम्भ करते हैं। एफ़एलएन आजीवन शिक्षा अर्जित करने की नींव रखती है। मसलन, लेखांकन, सांख्यिकी, रुझान (trend), कार्य-कारण जैसी अवधारणाओं को समझने में संख्याओं और गणितीय संक्रियाओं की बुनियादी समझ, जोड़ने-घटाने के मानक अल्गोरिद्म का प्रयोग, त्रिआयामी स्थानिक समझ व डेटा-हैंडलिंग जैसी दक्षताएँ अहम होती हैं। यह समझ बच्चों को भौतिकी, रसायनविज्ञान, अर्थमिति आदि जैसे विषयों की 'भाषा' से जुड़ने में भी सक्षम बनाती है। प्रतीकों व ध्वनियों के सम्बन्ध को समझने और प्रतीकों के समूह द्वारा कही जा रही बात समझने की क्षमता सुनने और पढ़ने से अर्थ बनाने की, जो पढ़ा है उस पर विचार करने की और अपने विचारों को लेखन के माध्यम से व्यक्त करने की, अपने पढ़े के बारे में गम्भीर रूप से सोचने और उसे तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने की नींव रखती है। इससे ऐतिहासिक व समकालीन स्रोतों की आलोचनात्मक व्याख्या करने की, प्रभावशाली लेखन और हिमायत करने, प्रयोगों के अवलोकनों और परिणामों को व्यक्त करने आदि की क्षमता विकसित होती है।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि जन्म से लेकर 8 वर्ष तक की उम्र अतिवृहत विकास का समय होता है। इसलिए, विद्यार्थियों से कक्षा-3 तक एफ़एलएन हासिल कर लेने की उम्मीद की जाती है। साथ ही, यह अवधि आस-पास की दुनिया को समझने और सामाजिक-भावनात्मक, नैतिक व सौन्दर्य बोध के अलावा सांस्कृतिक विकास के लिहाज़ से भी महत्त्वपूर्ण होती है। सारत: 3 से 8 साल की उम्र, काफ़ी हद तक, व्यक्ति के सीखने का पथ निर्धारित करती है, साथ-ही-साथ वयस्क उम्र में उसके सामाजिक सामंजस्य को भी निर्धारित करती है। इसीलिए, एनईपी 2020 में 'सीखने के लिए तात्कालिक आवश्यकता एवं पूर्वशर्त' (एनईपी 2020 के अध्याय-2 का शीर्षक) के बतौर एफ़एलएन के अधिग्रहण पर ज़ोर दिया गया है।

> क्या होगा यदि कक्षा-उपयुक्त आयु में एफ़एलएन क्षमता अर्जित नहीं की? विद्यार्थियों को उच्च कक्षाओं की दक्षताएँ हासिल करने में अधिकाधिक बाधाएँ आती हैं। उनसे अपेक्षित व उनकी वास्तविक क्षमताओं के बीच का अन्तर लगातार बढ़ता ही जाता है। फिर अक्सर, उन पर ऐसे ठप्पे लगा दिए जाते हैं जो दर्शाते हैं कि उनके स्कूलों और शिक्षकों ने उनसे कितनी कम उम्मीदें पाल रखी हैं। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि यह स्थिति सीखने की चाह को कम कर देती है। विद्यार्थी या तो रटकर समस्या से जूझने लगते हैं या पूरी तरह से पढ़ाई छोड़ देते हैं। इस प्रकार, स्कूल प्रणाली की कमी के लिए विद्यार्थियों को दण्डित किया जाता है।

दूसरी ओर, जिन भी विद्यार्थियों को अपनी शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान सही मदद मिलती है, वे समानियोजित व योगदान देने वाले वयस्क बनते हैं जो किसी-न-किसी तरह से कार्यरत हैं। शोध बताते हैं कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा और एक स्वस्थ समाज के संकेतकों (मसलन, जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी; लोकतंत्रीकरण और मानवाधिकार, राजनीतिक स्थिरता, अपराध दर में कमी, घटती ग़रीबी, विषमता में कमी, नागरिकों के स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी-प्रसार, बढ़ी हुई जीवन प्रत्याशा इत्यादि) के बीच एक स्पष्ट सम्बन्ध होता है। ऐसी शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के बच्चों के शैशव काल के बाद तक

जीवित रहने और अपनी स्कूली शिक्षा सन्तोषजनक ढंग से पूरी करने की सम्भावनाएँ अधिक होती हैं।

इसके अलावा, इन अपेक्षाकृत अमूर्त लाभों से इतर शिक्षा में निवेश के प्रतिफल जैसे ज़्यादा व्यावहारिक निमित्त भी तो हैं। इन प्रतिफलों की गणना, करों के ज़रिए अर्जित राजस्व के साथ-साथ कल्याण व बेहतर नागरिक समाजों से जुड़े सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों पर सार्वजनिक व्यय में कमी से की जाती है। दुनिया भर में हुए शोध बताते हैं कि प्रारम्भिक वर्षों की शिक्षा में निवेश पर प्रतिफल अन्य चरणों में किए गए निवेश की तुलना में अधिक होता है। उदाहरण के लिए, 2014 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के लिए मुद्रास्फीति-समायोजित अनुमानित वार्षिक लाभांश दर 7 प्रतिशत से लेकर 18 प्रतिशत तक के बीच थी। 1985-2012 के दौरान के विद्यार्थियों पर किए गए एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर किए गए प्रत्येक डॉलर के निवेश पर लगभग सात डॉलर का रिटर्न मिला। हालाँकि भारत में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा से सम्बन्धित ऐसे अध्ययन नहीं किए गए हैं, लेकिन हम अनुमान लगा सकते हैं कि कमोबेश इसी तरह की प्रवृत्ति देखी जाएगी।

देश में एफ़एलएन की मौजूदा स्थिति

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस) विभिन्न प्रकार के प्रबन्धन के तहत आने वाले स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा-3, 5, 8 व 10 वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का एक देशव्यापी आकलन है। यह देश में शिक्षा की स्थिति का स्पष्ट दृश्य प्रदान करता है। एनएएस की नवीनतम उपलब्ध रिपोर्ट 2021 की है।

एक सन्दर्भ के बतौर, एनएएस में आकलित परिणामों के कुछ उदाहरण हैं :

(i) भाषा में : छोटे पाठों को समझ के साथ पढ़ते हैं (मुख्य विचारों, विवरणों, अनुक्रम की पहचान लेते हैं और निष्कर्ष निकाल लेते हैं) और कक्षा की दीवारों पर छपी लिखाइयाँ (कविताएँ, पोस्टर, चार्ट आदि) पढ़ते हैं।

(ii) गणित में : स्थानीय मान का उपयोग करके 999 तक की संख्याओं को पढ़ते हैं और लिखते हैं, रोज़मर्रा के कामों में गुणन तथ्यों (10 तक) को बनाते हैं और उपयोग करते हैं, दीवार घड़ी/ हाथ घड़ी का उपयोग करके समय को घण्टे तक सही ढंग से पढ़ लेते हैं, टैली मार्क्स/ मिलान चिह्नों का उपयोग करके डेटा रिकॉर्ड करते हैं, सचित्र रूप से दर्शाते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं आदि।

एनएएस 2021 से पता चलता है कि कक्षा-3, 5, 8 और 10 में विद्यार्थियों का अधिगम स्तर कम है। कक्षा-3 में शिक्षार्जन का औसत स्तर 59 प्रतिशत, कक्षा-5 में 49 प्रतिशत, कक्षा-8 में 42 प्रतिशत और कक्षा-10 में 36 प्रतिशत है। ग़ौरतलब है कि छोटी कक्षाओं से बड़ी कक्षाओं तक शिक्षार्जन में गिरावट आई है; यह 2017 में किए गए पिछले एनएएस के परिणामों के समान ही है। हालाँकि, एनएएस 2017 की तुलना में 2021 में सभी विषयों के लिए इन सभी कक्षाओं में सीखने के स्तर में गिरावट आई है।

कक्षा-3 के लिए गणित का स्कोर 57 प्रतिशत था जबकि भाषा का स्कोर 62 प्रतिशत रहा। कक्षा-5, 8 और 10 में भाषा व गणित दोनों में प्रतिशत कक्षा-3 की तुलना में कम थे।

एनईपी 2020 के परिप्रेक्ष्य में एफ़एलएन के लक्ष्य कैसे प्राप्त किए जाएँगे

देश में एफ़एलएन की स्थिति में सुधार के लिए कई प्रयास किए गए हैं। 1968 में बनी शिक्षा नीति से ही बचपन के शुरुआती वर्षों के महत्त्व पर बल दिया गया है और बाद की नीतियों व प्रासंगिक दस्तावेज़ों ने भी इस पर ज़ोर देना जारी रखा।

1975 में शुरू की गई एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (आईसीडीएस) योजना का उद्देश्य 2-6 वर्ष की आयु के बच्चों को शिक्षा प्रदान करना था। योजना के तहत देशभर में *आँगनवाड़ी* केन्द्र स्थापित किए गए।

1990 के दशक में ज़िला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) के तहत, यथासम्भव *आँगनवाड़ी* केन्द्रों को प्राथमिक विद्यालय परिसर के भीतर स्थानान्तरित कर प्राथमिक शिक्षा को आईसीडीएस के साथ मिलाने का प्रयास किया गया।

2013 में, राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा (ईसीसीई) नीति जारी की गई थी, जिसमें '6 वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों के इष्टतम विकास और सीखने की सक्रिय क्षमताओं के लिए समावेशी, न्यायसंगत एवं प्रासंगिक अवसरों' की अनुशंसा की गई थी। 2014 में, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 3-6 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की, इसके बाद एनसीईआरटी के द्वारा *प्री-स्कूल शिक्षा हेतु दिशा-निर्देशों* के साथ 2019 में एक प्री-स्कूल पाठ्यक्रम तैयार किया गया।

एनईपी 2020 स्कूली शिक्षा की संरचना में कुछ बुनियादी बदलावों के द्वारा इन प्रयासों को आगे बढ़ाती है। यह उस पारितंत्र के व्यापक सन्दर्भ में सर्वव्यापी एफ़एलएन की प्राप्ति को स्थापित करने का प्रयास करती है जिसके भीतर शिक्षा प्रणाली स्थित है। इसके मद्देनज़र, यह स्कूल के चरणों का

पुनर्गठन करती है। इसके तहत प्री-स्कूल (कक्षा-1 से पहले) शिक्षा के तीन साल और कक्षा-1 व 2 को मिलाकर एक फ़ाउंडेशनल स्टेज बनाया गया है। यह परिवर्तन पाठ्यचर्या सम्बन्धी और अकादमिक/ शैक्षिक है, इसका इरादा 3-6 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाले सभी केन्द्रों तथा प्राइमरी चरण के पहले दो वर्षों के लिए शिक्षा प्रदान करने वाले केन्द्रों को एक साथ एक छत के नीचे लाने का नहीं हैं। इसका महत्त्व यह है कि 3-6 वर्ष की आयु के सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में निरन्तरता और पढ़ाने का तरीक़ा समान होगा।

इसके बाद, यह सामाजिक आर्थिक रूप से वंचित समूहों के विद्यार्थियों को शामिल करने की एक परिकल्पना प्रस्तुत करती है। उन विद्यार्थियों के लिए जिन्हें कक्षा-1 से पहले शिक्षा का लाभ नहीं मिला है, यह स्कूली-तैयारी मॉड्यूल के माध्यम से आवश्यक दक्षताओं की प्राप्ति सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। इसके लिए एनसीईआरटी ने *विद्या प्रवेश* नामक एक मॉड्यूल विकसित किया है और विभिन्न प्रदेशों ने या तो इसी मॉड्यूल को अपने हिसाब से ढाला है या फिर अपना ही एक मॉड्यूल विकसित किया है।

नए ढाँचे पर स्थानान्तरित होने के लिए एनईपी 2020 जहाँ सम्भव हो वहाँ प्राथमिक विद्यालयों के भीतर *बालवाटिकाएँ* या प्रारम्भिक कक्षाएँ लगाने की बात भी करती है, ताकि आँगनवाड़ी कर्मियों की क्षमताएँ विकसित होने तक अर्हता-प्राप्त शिक्षक विद्यार्थियों की सीखने में सहायता कर सकते हैं।

एनईपी 2020 जारी होने के बाद 2021 में, केन्द्र सरकार ने *समग्र शिक्षा* की केन्द्र प्रायोजित योजना के तत्वावधान में 'निपुण' (समझ के साथ पढ़ने और संख्या ज्ञान में प्रवीणता हेतु राष्ट्रीय पहल) भारत मिशन शुरू किया। 'निपुण' मिशन का फोकस 3 से 9 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों पर है, जिसमें प्री-स्कूल से लेकर कक्षा-3 तक के विद्यार्थी शामिल हैं। साथ ही, चौथी व पाँचवीं के वे विद्यार्थी जो एफ़एलएन अर्जित नहीं कर पाए हैं, उन्हें आवश्यक दक्षताएँ हासिल कराने के लिए शिक्षक का व्यक्तिगत मार्गदर्शन, सहपाठियों की मदद और आयु-उपयुक्त व पूरक शिक्षण सामग्री प्रदान की जाएँ। मिशन के लक्ष्य और उद्देश्य सभी स्कूलों के लिए हैं ताकि 2026-27 तक समस्त एफ़एलएन कौशलों का सर्वव्यापी अर्जन हासिल किया जा सके।

एनईपी 2020 का कक्षाओं में अन्तरण

कक्षाओं में नीति का अन्तरण पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से किया जाता है। पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के मूल में आदर्श रूप से स्कूलों का परिवेश व सन्दर्भ होता है लेकिन ये राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा द्वारा निर्देशित होते हैं ताकि सीखने के व्यापक लक्ष्यों में एकरूपता रहे।

अक्टूबर 2022 में, फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) जारी की गई थी। और अगस्त 2023 में, स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ़-एसई) जारी की गई। एनसीएफ़-एसई समस्त स्कूली शिक्षा के लिए है एवं एनसीएफ़-एफ़एस फ़ाउंडेशनल स्टेज पर केन्द्रित है।

एनसीएफ़-एफ़एस का प्रयोजन एनईपी 2020 के उद्देश्य और भावना के साथ सामंजस्य बनाते हुए देश भर में पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या के विकास में मदद करना है। इसका उद्देश्य उन प्रमुख स्थानान्तरण को रेखांकित करना भी है जो एनईपी 2020 के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिहाज़ से महत्त्वपूर्ण हैं। इसे सबसे पहले, फ़ाउंडेशनल स्टेज के लिए पाठ्यचर्या, शैक्षणिक व मूल्यांकन विधियों को स्पष्ट करते हुए समर्थ बनाया गया है। इसके बाद, यह विभिन्न सन्दर्भों के उदाहरणों के साथ दैनन्दिन स्कूली प्रक्रियाओं व कक्षा अभ्यासों के स्तर पर विशिष्ट विवरण प्रदान करती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एनसीएफ़-एफ़एस उन अधिगम मानकों को बताती है, जिनमें पाठ्यचर्या के वे व्यापक लक्ष्य और दक्षताएँ शामिल हैं जिन्हें फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक हासिल किया जाना है। यह विद्यार्जन के ऐसे ब्यौरेवार प्रतिफल भी सुझाती है जिनसे फ़ाउंडेशनल स्टेज के अन्त तक वांछित दक्षताओं की प्राप्ति होगी। ये शिक्षा-प्रतिफल स्कूली शिक्षा के किसी विशिष्ट वर्ष से जुड़े नहीं होते, कारण कि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी ख़ास गति से सीखता है।

एनसीएफ़-एफ़एस, एफ़एलएन लक्ष्यों की प्राप्ति से भी परे है। यह संज्ञानात्मक विकास तथा भाषा व साक्षरता विकास से परे अधिक व्यापक लक्ष्यों को हासिल करती है। इस प्रकार, जहाँ 'निपुण' भारत और एनसीएफ दोनों दक्षता-आधारित तरीक़ा अपनाते हैं, वहीं एनसीएफ़-एफ़एस, 'निपुण' भारत दक्षताओं से भी आगे जाता है। इस प्रकार, यह विभिन्न चरणों में शिक्षार्जन के लिहाज़ से आवश्यक समग्र विकास को सक्षम बनाती है।

निष्कर्ष

समस्त शिक्षार्जन के आधार के रूप में एफ़एलएन की बुनियादी दक्षताओं की धारणा, एनईपी 2020 और परिणामस्वरूप एनसीएफ़ के 'शिक्षार्जन के अभ्यास' के आग्रह से मेल खाती है। यह आग्रह स्पष्ट रूप से इस विचार का संकेत देता है कि

सब कुछ सिखाया नहीं जा सकता और न ही सिखाया जाना चाहिए। लेकिन जो सीखना है वह है स्कूल के वर्षों में या उसके बाद के वर्षों में विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण या रुचिकर चीज़ को सीखने की क्षमता। सीखना सिलसिलेवार होना चाहिए – यदि कोई कड़ी छूट जाती है, तो इसे पाटने में लम्बा समय या जीवन-भर लग सकता है। इस प्रकार, स्कूलों व शिक्षकों पर फ़ाउंडेशनल स्टेज के सभी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने की ज़िम्मेदारी है।

आभार

इस लेख की संकल्पना और इस हेतु अपने बहुमूल्य योगदान प्रदान करने के लिए लेखक, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु में प्रवेश आउटरीच टीम की सदस्य प्रतीति प्रसाद के प्रति अपना आभार प्रकट करती हैं।

Bibliography

Prendergast, T., Diamant-Cohen, B. (2014). Investing in Early Childhood. What's the ROI? *Children and Libraries, Winter 2014*

Quinton, S. (2013). What San Antonio has to teach Washington, *National Journal, Vol. 36*

Ministry of Education. (2022). *National Achievement Survey*. https://nas.gov.in/

Ministry of Education. (2020). *National Education Policy*. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

NCERT. (2022). *National Curriculum Framework for Foundational Stage*. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf

NCERT. (2023). *National Curriculum Framework for School Education*. *https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NCF-School-Education-Pre-Draft.pdf*

निमरत खण्डपुर 2011 में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़ीं थीं। वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन एंड यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर (SCE-URC) की सदस्य हैं। वे फ़ाउंडेशन के शिक्षा नीति से जुड़े काम में मदद करती आई हैं और नीति के प्रसार व समीक्षा में अपना योगदान देती रही हैं। साथ ही, प्रादेशिक व केन्द्रीय निकायों द्वारा की गई नीति सम्बन्धी पहल में भी सहायता करती हैं। उनसे *nimrat.kaur@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण :** उमा सुधीर **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

मैंने देखा है कि शिक्षक उन विद्यार्थियों के साथ अधिक समय बिताते हुए दिखते हैं जो तेज़ी से सीखते हैं और चीज़ों को बेहतर ढंग से समझते हैं, जबकि जिन्हें वास्तव में अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है उन्हें बहुत कम समय दिया जाता है। मेरा मानना है कि यदि सभी शिक्षक इस प्रश्न पर विचार करें कि, *इन बच्चों को कक्षा स्तर तक आने में मदद करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ताकि वे भी सीखना शुरू कर सकें?* तो वे इन बच्चों के लिए सीखने-सिखाने की रणनीति विकसित करने पर ध्यान दे सकते हैं और उन्हें कक्षा में निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।

- सतवीर सिंह चौहान, मिश्रित क्षमता वाली कक्षा में समय का नियोजन, पेज 44